बरसो रे मेघा

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 12 - 18 July 2026

राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

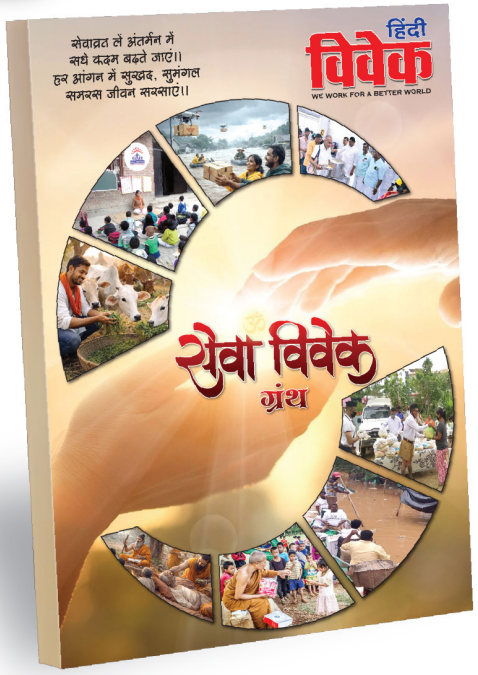

प्रकाशन पूर्व मूल्य
600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

अनुक्रमणिका

◆ मेघदूतम्: वर्षा ऋतु का अमर काव्य	सुनीता माहेश्वरी	04
◆ भीगे आज इस मौसम में...	डॉ. विनोद चोपड़ा	06
◆ बदलते दौर की नई अभिव्यक्ति	निहारिका पोल सर्वटे	09
◆ भाई-बहन कूटनीति	रंजीत कुमार	11
◆ डे-केयर नहीं हो सकते परिवार के पर्याय	अतुल मोहन सिंह	13
◆ एकता, समरसता व संस्कृति के प्रतीक	लवकुश तिवारी	16
◆ जलसंकट व सूखते जलस्रोत	डॉ. दीपक कोहली	18
◆ अतिक्रमण पर धामी की कार्रवाई	अभिमन्यु कुमार	20
◆ आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला	डॉ. ताड़केश्वर नाथ मिश्र	21
◆ यूरोप में भीषण गर्मी का कहर	स्निग्धा अवतंस	24
◆ सिटीजन विजिलेंट ने छेड़ी नई बहस	विष्णु शर्मा	25
◆ कुशल सेनापति ले.जनरल सगत सिंह	संकलन	27
◆ इधर भी देखें	संकलन	28
◆ समाचार	–	29

पंजीयन शुल्क

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2,
श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप,
कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067. सम्पर्क : 9594991884

मेघदूतम्: वर्षा ऋतु का अमर काव्य

जब आकाश में काले मेघ घिरते हैं और धरती प्यासी बूंदों को तरसती है, तब कालिदास की अमर कृति 'मेघदूतम्' मानव हृदय की गहराइयों को छू लेती है।

सुनीता माहेश्वरी

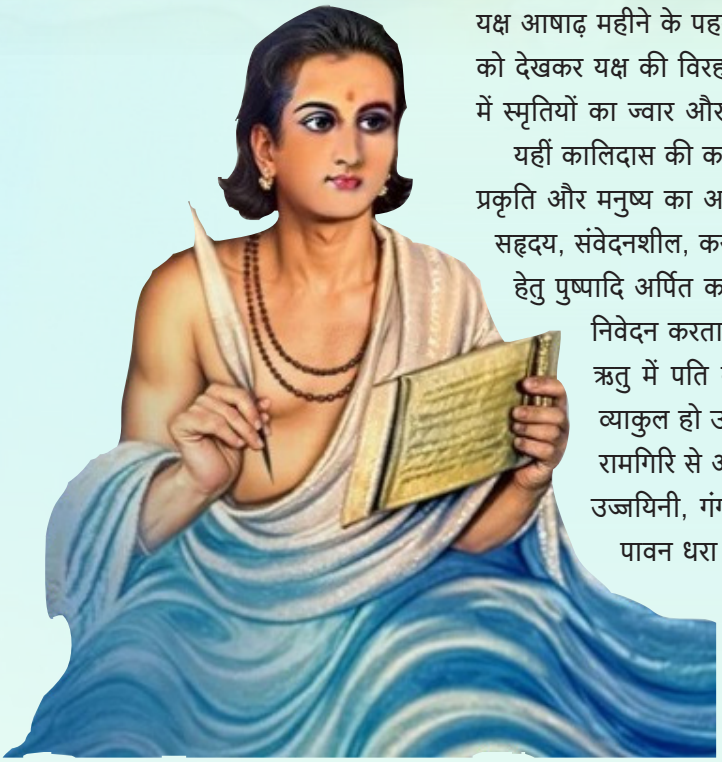

आषाढ़ के आते ही जब नील नभ में मेघ आच्छादित हो जाते हैं, सूर्य की तपती किरणों से दग्ध प्यासी धरा वर्षा की बूंदों से तृप्त हो सुवासित हो मुस्कुराने लगती है, चर-अचर सभी नव जीवन पाकर हर्षित हो उठते हैं, तब इस पावन ऋतु में महाकवि कालिदास कृत खंडकाव्य 'मेघदूतम्' का स्मरण सहज ही मन में सजीव हो आनंद का संचार करने लगता है क्योंकि प्रकृति की धड़कन को सुनने में सिद्धहस्त, प्रकृति के चितेरे कविकुल गुरु कालिदास ने इस अनुपम काव्यकृति में प्रकृति को केवल दृष्टि का सौंदर्य मानकर चित्रित नहीं किया अपितु उसे मानवीय संवेदनाओं एवं भावों का स्पंदन प्रदान किया। उन्होंने मेघ को अपनी कृति का मुख्य पात्र बनाया है। इसीलिए मंदाक्रांता छंद में लिखा 'मेघदूतम्' केवल एक खंडकाव्य नहीं बल्कि एक अमर भावसृष्टि है, जहां मेघ संवाद करते हैं, पर्वत आलिंगन करते हैं, नदियां मुस्कुराते हुए मेघ का स्वागत करती हैं और वर्षा प्रेम का साक्षात स्वरूप बन जाती है।

मेघदूतम् वस्तुतः वर्षा ऋतु का खंडकाव्य है। आषाढ़ का प्रथम मेघ ही पूरी कथा का आधार बनता है। 'आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघसंश्लिष्ट सानुं' ऐसा प्रतीत होता है जैसे महाकवि कालिदास का वर्षा ऋतु एवं मेघों के साथ एक गहरा और अमर सम्बंध है। महाकवि कालिदास की पावस ऋतु में विरह, आशा, स्मृति और प्रेम की बूंदे बरसती हैं।

'मेघदूतम्' इस खंडकाव्य के कथानक में एक यक्ष अपनी नव परिणीता पत्नी के साथ अतिशय प्रेमरंग में डूबे रहने के कारण अपने शासक धनपति कुबेर के किसी काम से प्रमाद कर बैठता है। परिणामतः अलकापुरी के शासक कुबेर उसे एक वर्ष के लिए अलकापुरी से निष्कासित कर देते हैं। यक्ष वहां से भारत के मध्य भाग में स्थित रामगिरि पर्वत के एक आश्रम में रहने लगता है। 8 महीने व्यतीत होने पर एक दिन रामगिरि पर्वत पर रहने वाला निर्वासित यक्ष आषाढ़ महीने के पहले दिन, पर्वत की चोटी से लिपटे हुए काले बादल को देखता है। मेघ को देखकर यक्ष की विरह व्यथा और भी घनीभूत हो उठती है। उसके नेत्रों में अश्रु तथा हृदय में स्मृतियों का ज्वार और जीवन में प्रतीक्षा का विस्तार छा जाता है।

यहीं कालिदास की काव्य-प्रतिभा अपना पहला चमत्कार दिखाती है। यही वह क्षण है जहां प्रकृति और मनुष्य का अद्वैत स्थापित होता है। मेघ अब मात्र जल पुंज नहीं रहता अपितु वह सहृदय, संवेदनशील, करुणा से पूर्ण उसका जीवंत मित्र बन जाता है। वह मेघ को प्रसन्न करने हेतु पुष्पादि अर्पित करता है और अपना संदेश अपनी प्रिय प्रेयसी तक पहुंचाने का विनम्र निवेदन करता है। उसे लगता है कि उसकी यक्षिणी भी वर्षा की इस मोहक-मादक ऋतु में पति के वियोग में कैसे जी रही होगी, यह सोचकर वह और भी अधिक व्याकुल हो उठता है। दो भागों में विभक्त मेघदूतम में पूर्वमेघ में विरही यक्ष मेघ को रामगिरि से अलका तक का मार्ग बताता है। जिसमें विंध्य पर्वतमाला रेवा (नर्मदा), उज्जयिनी, गंगा-यमुना क्षेत्र, हिमालय यह भाग वस्तुतः वर्षा ऋतु में भारतवर्ष की पावन धरा का काव्यमय मानचित्र है। उत्तरमेघ में अलकापुरी का सौंदर्य, यक्षिणी की अवस्था और संदेश का भावपूर्ण विस्तार तथा मिलन की आशा का भाव है। यह भाग विरह-श्रृंगार का अत्यंत मार्मिक उदाहरण है। पूर्वमेघ में महाकवि कालिदास कृत 'मेघदूतम्' में रामगिरि से अलकापुरी तक की यात्रा में वर्षा ऋतु में प्रकृति का ऐसा मनमोहक

वर्णन किया गया है कि पाठक मात्र उसे पढ़ता नहीं अपितु निज इंद्रियों से अनुभव करता है। यक्ष द्वारा वर्णित इस यात्रा वर्णन में भारत की आत्मा का दर्शन होता है। काव्य में मेघ रामगिरि से चलकर मालवा क्षेत्र, आम्रकूट, नर्मदा, वेत्रवती, विदिशा, उज्जैन होता हुआ गंगा द्वार और कनखल से हिमालय पर आरोहण कर कैलाश से अलकापुरी की ओर जाता है।

यक्ष मेघ को मार्ग बताता चलता है और उसके साथ कालिदास की तूलिका वर्षा के प्राकृतिक सौंदर्य पर छंदों की सुधा-वृष्टि करती चलती है। कहीं पर्वत-शिखरों से घिरे मेघ ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो पृथ्वी ने अपने दोनों हाथ उठाकर मेघों को आलिंगन में बांध लिया हो। कहीं नदियां अपनी चंचल लहरों से उनके चरण पखारती हुई बह रही हैं। कहीं छोटी-छोटी धाराएं मानो वनदेवियों की हंसी बनकर झरती प्रतीत होती हैं। कहीं कदम्ब की डालियों पर झूलती वर्षा-बूंदें मोतियों की मालाओं-सी झिलमिलाती हैं और कहीं वर्षा के स्वागत में पंख फैलाकर नृत्य करते मयूर ऐसे लगते हैं, मानो स्वयं इंद्रधनुष पृथ्वी पर उतर आया हो। कविकुल गुरु कालिदास ने प्रकृति का ऐसा मानवीकरण किया है कि मानव और प्रकृति के बीच एकीकरण स्थापित हो गया है। यक्ष का विरह मानो मेघों का विरह हो गया है, उसकी व्यथा बूंदों में टपकने लगती है और उसकी स्मृतियां वायु के साथ बहने लगती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि समस्त सृष्टि उस अकेले यक्ष-हृदय की पीड़ा में सहभागी बन गई हो।

पावस ऋतु में भीगी हुई मिट्टी की सोंधी गंध, काले बादलों का नभ में उमड़-घुमड़ कर आना, विद्युत की चंचल चमक, मंद-मंद बहती शीतल पवन, वर्षा से धुले पर्वत, नव अंकुरित वनस्पतियां, कलकल करतीं नदिया, मयूरों का उल्लसित नृत्य और चातक की व्याकुल पुकार- ये सब मिलकर वर्षा को जीवंत बना देते हैं। पावस का यह अनुपम रूप नेत्रों को तो आनंद देता ही है, पर साथ ही वह सचेतन हो मनुष्य के हृदय तक पहुंच कर उसकी भावनाओं को उद्दीप्त करता है। मेघदूत खंड काव्य में कवि ने यक्ष, यक्षिणी के वियोग श्रृंगार को तो दर्शाया ही है, साथ ही प्रकृति के संयोग श्रृंगार का भी अप्रतिम वर्णन किया है। इसीलिए मेघदूतम् का हर मेघ जल के साथ-साथ प्रेम और संवेदनाओं से भी भरा हुआ है और प्रत्येक वर्षा की बूंद धरती के साथ-साथ हृदय को भी सींचती है। युग युगांतर से जीवनदायी ये श्यामल मेघ वर्षा करके न केवल मन को मोहित करते आए हैं अपितु हृदय में प्रेम, आशा, उमंग भरकर आनंद का संचार करते आए हैं।

●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

Combo Offer

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

- भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।
- सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।
- सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।
- सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।
- इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।
- आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

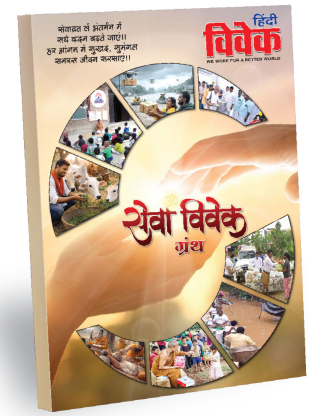

हिंदी विवेक की पंचवार्षिक सदस्यता मूल्य ₹ 500 + सेवा विवेक ग्रंथ मूल्य ₹ 1800 + मूल्य ₹ 700

कुल : ₹ 3000/-

आपको मिलेगा मात्र ₹ 2500 में

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें या...
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

डॉ. विनोद चोपड़ा

वर्षा ऋतु के मधुर गीत केवल संगीत रचनाएं नहीं हैं बल्कि प्रकृति के साथ मानवता के अटूट और शाश्वत सम्बंधों की अभिव्यक्ति हैं। ये गीत लोगों के हृदयों को आनंद, आशा और मधुर सामंजस्य से भरते रहेंगे। हमें यूं ही गुदगुदाते रहेंगे।

भीगे आज इस मौसम में...

भीगी-भीगी रातों में मीठी मीठी बातों में
ऐसी बरसातों में कैसे लगता है,
ऐसा लगता है तुम बन के बादल
मेरे बदन को भिगो के मुझे छेड़ रहे हो।

मानसून में जैसे ही वर्षा की फुहारें इस धरा पर पड़ती हैं, मानो धरती की सतह पर वीणा की तारें झनझना उठती हों। जैसे न जाने कब से बारिश की बूंदें धरती से मिलने को आतुर हों। लगता है मानो बारिश की बूंदें और मिट्टी के कण स्वच्छंद नृत्य कर रहे हों। सदियों से मानसून कितने ही गीतकारों और कवियों को सदियों से प्रेरित करता आ रहा हैं कविताओं और गीतों को शब्दों में ढालने के लिए। ये गीत न केवल हमें गुदगुदाते हैं बल्कि तनाव और थकावट को दूर करके हमें रोमांच से भर देते हैं।

बरसात के गीत दो प्रेमियों को एक नई दुनिया में ले जाते हैं, जहां वे जीवन के दुखों से दूर खो जाते हैं एक-दूसरे के प्यार में।

रिमझिम गिरे सावन, सुलग-सुलग जाए मन
भीगे आज इस मौसम में लगी कैसी ये अगन

वर्षा ऋतु सदियों से कवियों, संगीतकारों और लेखकों के लिए प्रेरणा का स्रोत रही है। वर्षा की बूंदों की लयबद्ध ध्वनि, भीगी हुई मिट्टी की सोंधी सुगंध और ठंडी हवाएं ऐसा वातावरण निर्मित करती हैं, जहां संगीत स्वतः जन्म लेता है। वर्षा ऋतु के मधुर गीत ऐसे

सुरों और धुनों का रूप हैं जो वर्षा की सुंदरता, आनंद, विरह, प्रेम और आध्यात्मिक शांति को अभिव्यक्त करते हैं। ये गीत प्रकृति का केवल उत्सव नहीं मनाते बल्कि मानव और बदलते मौसमों के बीच गहरे भावनात्मक सम्बंध को भी दर्शाते हैं। हर बरसात में लगता है जैसे ऐसा मौसम पहली बार ही आया हो, पहले कभी नहीं आया:

ऐसा मौसम पहले कभी आया नहीं,
ऐसा बादल अम्बर पे सजना छाया नहीं,
ये सुहाना समां प्रेम की खोज में, मौज में

ये मधुर गीत ना केवल दिलों की तारों को छेड़ देते हैं अपितु दो प्रेमियों को एक नई दुनिया में ले जाते हैं। दो प्रेमी एक-दूसरे के साथ हैं और वर्षा की फुहार उन्हें गुदगुदाती हैं।

भारतीय परम्परा में वर्षा ऋतु का साहित्य और संगीत में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। लोककथाओं में यह भी वर्णित है कि इन रागों में वर्षा कराने की शक्ति थी। चाहे यह ऐतिहासिक रूप से सत्य हो या न हो, परंतु यह तो सत्य ही है कि वर्षा स्वयं संगीत को जन्म देती है। ये मधुर गीत गर्जन करते बादलों, आकाश में उमड़ते-घुमड़ते मेघों और वर्षा की कोमल बूंदों की लय का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं।

बरसात के गीत जन मानस के दिलों के सागर में मानो हिचकोले लेते रहते हैं। भारतीय लोक परम्पराओं में भी वर्षा ऋतु के गीतों का विशेष महत्व है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में मानसून के आगमन का स्वागत कृषि कार्यों, ग्राम उत्सवों और पारिवारिक समारोहों के दौरान गाए जाने वाले लोकगीतों से किया जाता है। किसान वर्षा का स्वागत उल्लासपूर्ण गीतों के माध्यम से करते हैं, जिनमें उपजाऊ खेतों और भरपूर फसल के लिए कृतज्ञता व्यक्त की जाती है। महिलाएं सावन और वर्षा से जुड़े पारम्परिक गीत गाकर प्रेम, विरह, आशा और भक्ति जैसी भावनाओं को अभिव्यक्त करती हैं। वहीं प्रेमियों के लिए तो जैसे ये मौसम सोने पे सुहागा हो। सचमुच ही इस मौसम की कीमत को आंका नहीं जा सकता।

हाय-हाय ये मजबूरी ये मौसम और ये दूरी,
मुझे पल-पल है तड़पाए,
तेरी दो टक्यां दी नौकरी,
मेरा लाखों का सावन जाए

बरसात के इन गीतों को सुनते ही रोम-रोम गुदगुदाने लगते हैं। कौन भूल सकता है राज कपूर पर फिल्माए गए गाने को।

प्यार हुआ इकरार हुआ,
प्यार से फिर क्यों डरता है ये दिल

आज भी यह गीत तन-मन को स्पंदित कर देता है। न केवल साहित्य अपितु सिनेमा ने भी वर्षा ऋतु के गीतों की इस परम्परा को समृद्ध बनाया है। असंख्य गीतों में वर्षा के बीच मिलते प्रेमी-युगलों, वर्षा में खेलते और नृत्य करते बच्चों का सुंदर चित्रण मिलता है। इन गीतों में अपने प्रियजन की प्रतीक्षा करते अकेले हृदयों का सुंदर चित्रण मिलता है।

ओ मेरे सजन बरसात में आ।
सावन की अंधेरी रात में आ।।
सावन की अंधेरी रातों में क्या होता है, मैं क्या जानूं ।
मैं रोती हूं, दिल रोता है और साथ ही बादल रोता है।।

इन गीतों में वर्षा नवजीवन, स्मृतियों, प्रेम और भावनात्मक उपचार का एक शक्तिशाली प्रतीक बन जाती है। वर्षा की मधुर ध्वनि स्वयं संगीत की स्वाभाविक संगत बनकर इन गीतों को और अधिक प्रभावशाली एवं अविस्मरणीय बना देती है।

वर्षा ऋतु के गीतों का सार्वभौमिक आकर्षण इस बात में निहित है कि वे मनुष्य को प्रकृति से जोड़ते हैं। वर्षा की ध्वनि मनोवैज्ञानिक रूप से शांति प्रदान करती है, तनाव को कम करती है और आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है। जब यह मधुर संगीत और अर्थपूर्ण गीतों के साथ मिलती है, तो बचपन की यादें, परिवार, त्योहार और जीवन के सुखद क्षण पुनः जीवंत हो उठते हैं। ये गीत हमें स्मरण कराते हैं कि प्रकृति और संगीत का अद्भुत संगम मानव मन को शांति प्रदान करने के साथ-साथ सृजनात्मकता को भी प्रेरित करता है।

●●●

50+ YEARS OF MOMENTUM
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
बदलत्या हवामानात स्वतःची काळजी घ्या... आणि कल्याण जनता बँकिंग ॲप द्वारे तुमची सर्व बँकिंग कामे करा - सुरक्षितपणे, सहज आणि घरबसल्या.
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.bank.in
KJSBank

बदलते दौर की नई अभिव्यक्ति

उन्मुक्तता

निहारिका पोल सर्वटे

यौवन के द्वारा पर खड़ी युवतियों में बारिश को लेकर जो मस्ती है, मादकता है, उमंग है, उल्लास है वो केवल अब अनुभव से नहीं जीतीं बल्कि कुछ सेकंड की रील में ही अभिव्यक्त कर देती हैं।

पहली बारिश की फुहार जैसे ही धरती को छूती है, वातावरण का हर रंग बदल जाता है। तपती सड़कों पर ठंडक उतर आती है, पेड़ों की पत्तियां धुलकर चमकने लगती हैं और हवा में मिट्टी की सोंधी सुगंध घुल जाती है, लेकिन सबसे सुंदर बदलाव मानव चेहरों पर दिखाई देता है। विशेषकर यौवन की दहलीज पर खड़ी युवतियों के चेहरे पर, जिनके लिए बारिश केवल एक मौसम नहीं बल्कि भावनाओं का उत्सव बनकर आती है।

कभी बारिश में भीगना सिर्फ बचपन की शरारत हुआ करती थी। आज वही बारिश मोबाइल कैमरे, ट्रेंडिंग गानों और सोशल मीडिया रील्स के जरिए एक नई अभिव्यक्ति का रूप ले चुकी है। पार्क, कॉलेज कैम्पस, कैफे, झील किनारे या शहर की सड़कों पर बारिश की बूंदों के बीच फिल्मी गानों पर थिरकती, संवादों पर अभिनय करती और अपनी मुस्कान कैमरे में कैद करती युवतियां आज आम दृश्य बन गई हैं।

यह केवल मनोरंजन नहीं है। यह उस पीढ़ी की भाषा है, जो अपनी भावनाओं को शब्दों से अधिक दृश्यों में व्यक्त करना जानती है। जहां पिछली पीढ़ियां बारिश की यादों को डायरी के पन्नों में संजोती थीं, वहीं आज की पीढ़ी उन्हें कुछ सेकंड की रील में दुनिया के साथ साझा कर देती है। युवावस्था अपने साथ उत्साह, सपने और नई सम्भावनाएं लेकर आती हैं, ऐसे में बारिश का मौसम इस उमंग को और गहरा कर देता है। ठंडी हवा, बादलों का संगीत और हल्की फुहारें मन को सहज ही रोमांचित कर देती हैं। यही कारण है कि बारिश के दिनों में युवतियां अपनी दिनचर्या से थोड़ा बाहर निकलकर इन पलों को जीना चाहती हैं।

सोशल मीडिया ने इस अनुभव को नया मंच दिया है। अब हर रील केवल लाइक्स या

व्यूज के लिए नहीं बनती। कई बार वह किसी याद को संजोने, किसी मित्रता को अमर करने या जीवन के छोटे-छोटे सुखों को अनुभव करने का माध्यम भी होती है। बारिश में हंसते हुए चेहरे, उड़ते बाल, रंग-बिरंगी छतरियां और फिल्मी धुनों पर झूमते कदम केवल दृश्य नहीं बल्कि उस पल की सच्ची खुशी का प्रतिबिम्ब होते हैं। बारिश और फिल्मी गीतों का रिश्ता दशकों पुराना है। 90 के दशक में जब सोशल मीडिया नहीं था, तब युवतियां बारिश के मौसम में फिल्मों के गीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं को जीती थीं। वे टेलीविजन पर या कैसेट प्लेयर में टिप-टिप बरसा पानी, रिमझिम गिरे सावन, देखो जरा देखो या कोई लड़की है जब वो हंसती है, जैसे गीत सुनते हुए स्वयं को उन दृश्यों का हिस्सा अनुभव करती थीं। फिल्मों की नायिकाएं बारिश में प्रेम, उत्साह, शरारत और जीवन की मादकता को जिस सहजता से पर्दे पर जीती थीं, वही कल्पना लाखों युवतियों के मन में भी आकार लेती थी।

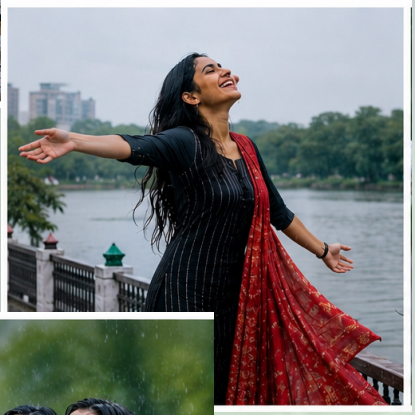

आज समय बदल गया है। अब केवल परदे पर नायिकाओं को देखकर कल्पनाएं बुनने का दौर नहीं रहा। स्मार्टफोन और सोशल मीडिया ने हर युवती को अपनी कहानी की नायिका बनने का अवसर दिया है। आज वही पुराने और नए फिल्मी गीत रील्स के माध्यम से एक नया जीवन पा रहे हैं। रिमझिम गिरे सावन की मासूमियत हो, बरसो रे मेघा की उन्मुक्तता हो या किसी नए रोमांटिक गीत की मधुर धुन, युवतियां इन पर रील बनाकर केवल एक वीडियो नहीं बनातीं बल्कि उन भावनाओं को स्वयं जीती हैं, जिन्हें कभी वे केवल पर्दे पर अनुभव किया करती थीं। वास्तव में रील्स का यह चलन केवल मनोरंजन नहीं बल्कि अभिव्यक्ति का लोकतांत्रिकरण भी है। कभी जो भावनाएं केवल फिल्मी सितारों तक सीमित थीं, आज वही सामान्य युवतियों के जीवन का हिस्सा बन गई हैं। बारिश की बूंदों के बीच मुस्कुराना, हवा में दुपट्टा लहराना, आंखों में सपने सजाना और किसी फिल्मी धुन पर कुछ पलों के लिए स्वयं को नायिका की तरह अनुभव करना, यह आत्म-अभिव्यक्ति का नया रूप है। कदाचित् यही कारण है कि बारिश के मौसम में सोशल मीडिया केवल वीडियो से नहीं बल्कि अनगिनत छोटे-छोटे सपनों, मुस्कानों और भावनाओं से भर जाता है।

हालांकि इस बदलते दौर के साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हैं। कभी-कभी बेहतर वीडियो बनाने की चाह में सुरक्षा को अनदेखा कर दिया जाता है। फिसलन वाली जगहों पर स्टंट करना, तेज बहाव वाले क्षेत्रों के पास शूट करना या सड़क के बीच रील बनाना दुर्घटनाओं को आमंत्रित कर सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि उत्साह के साथ जिम्मेदारी भी बनी रहे। सुंदर यादें तभी सार्थक हैं, जब वे सुरक्षित हों।

यह भी सच है कि सोशल मीडिया पर प्रायः युवाओं की आलोचना होती है कि वे हर पल कैमरे के लिए जीते हैं, लेकिन यदि गहराई से देखा जाए तो हर पीढ़ी ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अलग तरीका चुना है। कभी प्रेम-पत्र लिखे जाते थे, कभी फोटो एलबम बनाए जाते थे, तो कभी पारिवारिक वीडियो रिकॉर्ड किए जाते थे। आज उसी परम्परा का आधुनिक रूप रील्स हैं। माध्यम बदल गया है, लेकिन यादों को संजोने की इच्छा वही है।

बारिश हमेशा से साहित्य, संगीत और सिनेमा की प्रिय रही है। आज उसी बारिश ने डिजिटल दुनिया में भी अपनी जगह बना ली है। अंतर केवल इतना है कि पहले लोग बारिश को अनुभव करते थे, लेकिन अब उसे रिकॉर्ड भी करते हैं। अंततः बारिश की बूंदें केवल धरती को नहीं भिगोतीं, वे मन को भी तरोताजा करती हैं। यौवन की दहलीज पर खड़ी युवतियों की हंसी, उनकी मस्ती और रील्स के माध्यम से व्यक्त होता उनका आत्मविश्वास इस बात का संकेत है कि नई पीढ़ी जीवन के हर छोटे पल को पूरे मन से जीना चाहती है। आवश्यकता केवल इतनी है कि इस उत्सव में संवेदनशीलता, मर्यादा और सुरक्षा का साथ कभी न छूटे क्योंकि बारिश हर साल आएगी, लेकिन यादगार पल वही होंगे जो खुशी के साथ सुरक्षित भी हों। ●●●

समझौता

भारत और जापान द्वारा परस्पर लाभ के लिए इन तकनीकी क्षेत्रों में साझा प्रयास करने का निर्णय काफी महत्व रखता है क्योंकि इसी की बदौलत भारत और जापान मिलकर चीन की आर्थिक व सामरिक जगत में बढ़ती दादागीरी से मुकाबला करने में सक्षम होंगे।

भाई-बहन कूटनीति

रंजीत कुमार

पिछले दिनों भारत के कूटनीतिक कैलेंडर में दो दौरे काफी महत्वपूर्ण रहे। इस दौरान 1 से 3 जुलाई तक जापान की प्रधान मंत्री ताकाएची सानाए ने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के साथ 16वीं वार्षिक शिखर बैठक के लिए भारत का दौरा किया, जबकि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 से 29 जून तक हिंद महासागर के द्वीप देश सेशेल्स के साथ सामरिक रिश्तों को ठोस आकार प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण यात्रा की।

जापान दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति है, जबकि सेशेल्स मात्र सवा लाख जनसंख्या वाला एक अफ्रीकी द्वीप देश है, लेकिन हिंद महासागर में इसकी भू-सामरिक महत्व इतना है कि अमेरिका, चीन से लेकर फ्रांस तक इसे अपने प्रभुत्व में लेने की होड़ मची रहती है, पर सेशेल्स ने हमेशा भारत के साथ रिश्तों को महत्व दिया है और यही कारण है कि सेशेल्स ने अपनी स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत के प्रधान मंत्री मोदी को मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया और अपने देश का सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया। भारत के साथ सेशेल्स के रिश्तों पर जोर देकर पूरी दुनिया को यह संदेश दिया कि हिंद महासागर में वह भारत को ही अपना असली मित्र मानता है। सेशेल्स अपनी आर्थिक व सामरिक सुरक्षा में भारत के योगदान का आभारी है। इसलिए सेशेल्स द्वारा प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को अपने देश का सर्वोच्च सम्मान- गार्जियन ऑफ द ब्लू होराइजन (सेशल्स) प्रदान किया गया।

सेशेल्स से लौटने के तुरंत बाद प्रधान मंत्री मोदी जापान की प्रधान मंत्री ताकाएची सानाए से मिले, जिन्हें अपनी छोटी बहन कह कर सम्बोधित किया तो उत्तर में ताकाएची ने भी मोदी को अपना बड़ा भाई कहा। दोनों नेताओं ने इस तरह अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया। इस तरह दोनों देशों के बीच पारिवारिक रिश्ता बनाकर आपसी सामरिक रिश्तों को परिवार के साझा हितों से जोड़ कर यह संदेश अपने प्रतिद्वंद्वी देशों को दिया कि अपने परिवार के आर्थिक व सामरिक हितों की सुरक्षा वैसे ही करेंगे जैसे कि एक परिवार में भाई-बहन एक दूसरे के हितों को लेकर हमेशा चिंतित रहते हैं।

भारत और जापान दोनों विश्व की छठी और तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्थाएं हैं और दोनों देश चीन द्वारा व्यापार को हथियार के तौर पर प्रयोग किए जाने का समान तौर पर शिकार हो रहे हैं। इसलिए दोनों को अपने आर्थिक और सामरिक हितों के संवर्धन के लिए परस्पर सहयोग की भावना से रिश्तों को निरंतर मजबूती देना काफी महत्वपूर्ण होगा। इस दौरान भारत और जापान ने एक-दूसरे की सैन्य शक्ति को मजबूती प्रदान करने वाले अहम समझौते तो किए, साथ ही जापानी उद्योग जगत ने भारत के साथ निवेश व व्यापार के रिश्तों को गहराई प्रदान करने वाली सहमति संधियां भी सम्पन्न कीं। भारत और जापानी नेताओं ने दोनों देशों के आर्थिक जगत के प्रतिनिधियों के साथ एक साझा बैठक भी की। इन बैठकों के बाद जापानी प्रधान मंत्री ताकाएची सानाए ने प्रधान मंत्री मोदी के साथ एक साझा वक्तव्य जारी कर

चीन को अप्रत्यक्ष संदेश दिया कि दुनिया की अग्रणी अर्थव्यवस्था और जनतांत्रिक देश के रूप में भारत और जापान अपना यह कर्तव्य मानते हैं कि वे एक ऐसी विश्व व्यवस्था को खड़ा करने का प्रयास करेंगे जो मुक्त, सुरक्षित और कानून के शासन को सुनिश्चित करे। चीन जिस तरह से दक्षिण चीन महासागर और पूर्वी चीन महासागर के तटीय देशों के द्वीपों पर अपना दावा ठोंक रहा है और इस महासागर के तटीय देशों के द्वीपों को चीन का बताने के अलावा कृत्रिम द्वीपों का निर्माण कर अपने प्रादेशिक क्षेत्रों का विस्तार करने की रणनीति को अपना रहा है। यह न केवल जापान के लिए चिंताजनक है बल्कि भारत भी अपने साझेदार देशों के साथ चीन के इस विस्तारवादी नीति से निपटने की आवश्यकता पर बल देता रहा है। जापान की प्रधान मंत्री का भारत दौरा ऐसे समय हुआ जब चीनी आर्थिक व प्रादेशिक विस्तारवाद को चुनौती देने वाले समूह के तौर पर उभर रहे चार देशों के संगठन क्वाड को लेकर अमेरिका ने अपने को अलग-थलग करने जैसा व्यवहार अपना लिया है, लेकिन ताकाएची और मोदी ने आपसी बातचीत में हिंद प्रशांत क्षेत्र में चीन की चुनौतियों से मुकाबला करने के लिए अपनी साझेदारी को और मजबूती देने का संकल्प लिया। इसी दृष्टिकोण के अंतर्गत भारत और जापान की गहराती मित्रता का विशेष महत्व है। दोनों देशों की बढ़ती सामरिक साझेदारी से चिंतित हो कर ही चीन द्वारा भारत-जापान द्वारा जारी साझा वक्तव्य की निंदा की गई। अमेरिका द्वारा क्वाड को विश्व राजनीति में महत्वपूर्ण मोड़ पर लाकर छोड़ देने के बाद अब भारत और जापान ने मिलकर क्वाड की प्रासंगिकता बनाए रखने का संकल्प जिस तरह लिया है, उस पर चीन की गहरी दृष्टि है। चीन से मुकाबले के लिए तकनीकी तौर पर एक सशक्त भारत की आवश्यकता है जिसके लिए जापान ने अपना तकनीकी ज्ञान भारत के साथ बांटने के लिए तकनीकी सहयोग के समझौते भी किए हैं। मेट्रो रेल जैसे आधुनिक ढांचागत विकास में अभूतपूर्व योगदान देने के बाद जापान अब भारत के सेमीकंडक्टर क्षेत्र के विकास में भी गहरी रुचि ले रहा है। दुर्लभ खनिज और इस पर आधारित उत्पादों की सप्लाई में जिस तरह बाधा पैदा कर चीन ने भारत और जापान की आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं को चीन के मुकाबले खड़ा होने से रोकने का षडयंत्र शुरु किया है उससे भारत और जापान मिलकर मुकाबला करेंगे। इसके लिए दोनों देशों ने दुर्लभ खनिज और क्रिटिकल व उभरती हुई नई तकनीक के क्षेत्र में संयुक्त कार्यक्रमों को चलाने का निर्णय किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पंजीयन करें
पुस्तक का मूल्य
₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of
HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

डे-केयर नहीं हो सकते परिवार के पर्याय

बर्बरता

डॉ. अतुल मोहन सिंह

खेलने-कूदने और मां की गोद में मचलने की आयु में जब बच्चे डे-केयर में पलते हैं और जब उनके साथ अमानवीय व्यवहार होता है तो लोगों का मानव मन तार-तार हो जाता है। ऐसी विकृति के लिए तो कदाचित् हर कोई नि:शब्द ही होगा।

भारतीय सनातन परम्परा में 'धाय मां' का स्थान अत्यंत पवित्र और सम्मानजनक रहा है। धाय मां पन्ना का प्रसिद्ध कहानी कदाचित् हम सभी ने पढ़ा और सुना होगा। क्या ऐसी धाय मां का कोई विकल्प हो सकता है? इस प्रश्न का उत्तर 'नहीं' में ही मिलेगा।

हालांकि आधुनिक समाज ने उसकी भरपाई 'क्रेच' (डे-केयर) नामक संस्था में खोजने का असफल प्रयास अवश्य किया है। कामकाजी माता-पिता के लिए बेंगलुरु का हालिया डे-केयर कांड किसी बुरे सपने से कम नहीं है। अभिभावक लाख चाह लें, फिर भी इस घटना को मन से भुला नहीं पा रहे हैं।

जब माता-पिता दोनों कामकाजी होते हैं, तो बच्चों का भविष्य अधिकतर 'क्रेच' के भरोसे पलता है। बच्चे पलते तो हैं, पर संस्कारित नहीं हो पाते। संस्कारवान बनाने का कार्य नर्सरी या क्रेच नहीं बल्कि परिवार ही कर सकता है। ऐसी स्थिति में कामकाजी अभिभावकों को भारतीय सामाजिक व्यवस्था के भीतर ही इस भयावह समस्या का समाधान खोजना होगा।

भारत में कामकाजी दम्पत्तियों की सटीक संख्या का कोई आधिकारिक आंकड़ा उपलब्ध नहीं है। अनुमान के अनुसार दक्षिण भारतीय राज्यों में यह संख्या करोड़ों में है। अकेले बेंगलुरु में लगभग 1.30 करोड़ की जनसंख्या में कामकाजी दम्पत्तियों की संख्या 15 से 20 लाख के बीच होने का अनुमान है। आईटी सेक्टर इस मामले में सबसे आगे है। इसलिए 'सिलिकॉन वैली' कहे जाने वाले बेंगलुरु में ऐसे मामलों की संख्या स्वाभाविक रूप से सबसे अधिक है।

वास्तव में एकल परिवारों की बढ़ती संख्या ने एक साथ कई समस्याओं को जन्म दिया है। ठीक ढंग से लालन-पालन न हो पाने के कारण बच्चों में चिड़चिड़ापन बढ़ रहा है, जो धीरे-धीरे उनके शारीरिक और मानसिक विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। यही कारण है कि शहरी क्षेत्रों में डे-केयर और क्रेच की संख्या लगातार बढ़ रही है। अब यह समस्या पूरे देशव्यापी स्वरूप में बदल चुकी है।

निजी क्षेत्र की कई कम्पनियां अपनी महिला कर्मचारियों की सुविधा के लिए परिसर में ही क्रेच की व्यवस्था करती हैं। यह सेवा आमतौर पर थर्ड पार्टी सर्विस प्रोवाइडरों के माध्यम से उपलब्ध कराई जाती है। विशेषकर बेंगलुरु, हैदराबाद और पुणे जैसे आईटी हब शहरों में ऐसी सेवाएं देने वाली कम्पनियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

जानकारों का कहना है कि विभिन्न क्षेत्रों में आउटसोर्सिंग बढ़ने के कारण थर्ड पार्टी सेवाएं देने वाली कम्पनियों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। इनमें सफाईकर्मी, सुरक्षाकर्मी और क्रेच संचालक कम्पनियां शामिल हैं। बच्चों के हित में काम करने वाले एक गैर-सरकारी संगठन के अनुसार बड़ी कम्पनियों के लिए थर्ड पार्टी सेवाएं लेना मजबूरी बन गई है। किसी अप्रिय घटना के होने पर पूरा दोष थर्ड पार्टी पर मढ़ दिया जाता है और कम्पनी बच जाती है। इसलिए थर्ड पार्टी सेवाएं लेने वाली बड़ी कम्पनियों की भी जवाबदेही तय होनी चाहिए। कामकाजी दम्पत्तियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए क्रेच की सुविधा बेहद आवश्यक है, लेकिन थर्ड पार्टी सेवाएं लेते समय मानवीय पहलुओं को ध्यान में रखते हुए बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए और वहां काम करने वाले कर्मचारियों की प्रभावी निगरानी के लिए एक मजबूत तंत्र विकसित करना चाहिए।

कर्नाटक स्टेट कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स के अध्यक्ष संतोष कुमार ने बताया कि जिस क्रेच में घटना हुई, वहां 35 बच्चे थे और 14 कर्मचारी उनकी देखभाल करते थे। हम इस मामले को गम्भीरता से ले रहे हैं। बेंगलुरु के सभी डे-केयर सेंटर्स की जांच के आदेश दे दिए गए हैं।

इस घटना के बाद कैपजेमिनी कम्पनी के उस डे-केयर क्रेच को फिलहाल बंद कर दिया गया है। कम्पनी ने एक वक्तव्य में कहा है कि वह भारत में अपनी सभी यूनिट्स में डे-केयर सेवाएं देने वालों की नए सिरे से समीक्षा कर रही है। साथ ही प्रभावित महिला कर्मचारियों को कुछ समय के लिए वर्क फ्रॉम होम की सुविधा देने पर भी विचार किया जा रहा है। सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि कामकाजी दम्पत्तियों के लिए क्रेच की सुविधा बहुत आवश्यक है। इसलिए सरकार को इस मामले को गम्भीरता से लेते हुए कुछ स्पष्ट नियम बनाकर कम्पनियों पर उनका पालन अनिवार्य करना चाहिए। साथ ही केयरटेकर का चयन करते समय मानवीय पहलू को भी गम्भीरता से देखा जाना चाहिए। ●●●

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

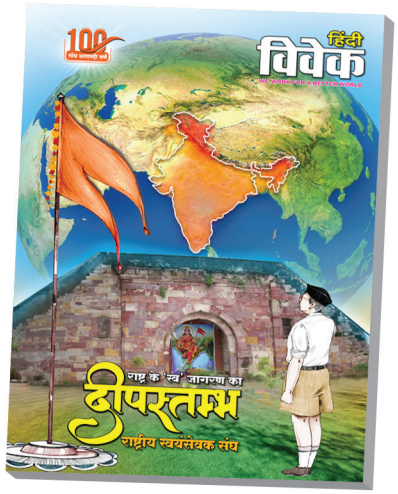

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

Pitambari Products Pvt. Ltd.
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 9886553105, East: 7752023380, 9867102999,
CRM: 022 - 67035564 / 5699. Toll Free: 18001031299.
Visit: www.pitambari.com/shop I CIN: U52291MH1989PTC051314.

यात्रा

लवकुश तिवारी

ये धार्मिक यात्राएं लोगों को यह अनुभव कराती हैं कि हम सब एक ही सांस्कृतिक परिवार के सदस्य हैं। भाषा, क्षेत्र, जाति और सामाजिक भिन्नताएं हमारी पहचान का हिस्सा हो सकती हैं, लेकिन हमारी आत्मा एक है, हमारी संस्कृति एक है और हमारा राष्ट्रीय जीवन एक है।

एकता, समरसता व संस्कृति के प्रतीक

भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं बल्कि विविधताओं से भरी एक जीवंत सांस्कृतिक चेतना है। यहां भाषा, वेशभूषा, खान-पान, परम्पराएं और जीवन-पद्धतियां भिन्न होते हुए भी एक अदृश्य सूत्र पूरे राष्ट्र को जोड़कर रखता है। इस सांस्कृतिक एकता के सबसे सशक्त उदाहरण देश की धार्मिक यात्राएं हैं। विशेष रूप से अमरनाथ यात्रा और जगन्नाथ यात्रा केवल आस्था के आयोजन नहीं हैं बल्कि भारतीय समाज की एकता, समरसता, सेवा, त्याग और राष्ट्रभावना के जीवंत उत्सव हैं।

हिमालय की ऊंचाइयों में स्थित बाबा बर्फानी की अमरनाथ यात्रा और ओडिशा के पुरी में आयोजित भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा दोनों ही भारत की सनातन परम्परा के ऐसे पर्व हैं, जहां लाखों लोग जाति, भाषा, क्षेत्र, वर्ग और आर्थिक भेदों से ऊपर उठकर एकात्मता का अद्भुत दर्शन कराते हैं।

अमरनाथ यात्रा : आस्था और साहस का संगम

समुद्र तल से लगभग 13 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित अमरनाथ गुफा तक पहुंचना किसी तपस्या से कम नहीं है। कठिन पर्वतीय मार्ग, प्रतिकूल मौसम और शारीरिक चुनौतियों के बाद भी लाखों श्रद्धालु हर वर्ष बाबा बर्फानी के दर्शन के लिए निकल पड़ते हैं। इस यात्रा में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक भारत के हर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व दिखाई देता है। यहां कोई बड़ा या छोटा नहीं होता।

कोई धनवान या निर्धन नहीं होता। सभी यात्रियों का परिचय केवल एक ही होता है- वे शिवभक्त हैं। यात्रा के दौरान लोग एक-दूसरे की सहायता करते हैं, अजनबी भी परिजन बन जाते हैं और सेवा की भावना स्वतः प्रकट होती है। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इस यात्रा में स्थानीय समाज, स्वयंसेवी संगठन, सुरक्षा बल, चिकित्सा दल और हजारों सेवा-भावी नागरिक मिलकर यात्रियों की सहायता करते हैं। लंगर, चिकित्सा शिविर, विश्राम स्थल और निःस्वार्थ सेवा भारतीय संस्कृति के उसी मूल मंत्र 'नर सेवा ही नारायण सेवा' को साकार करते हैं।

जगन्नाथ यात्रा : समरसता और लोक आस्था का विराट उत्सव

ओडिशा के पुरी में आयोजित जगन्नाथ रथयात्रा भारतीय समरसता का अनूठा उदाहरण है। भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा के विशाल रथ जब नगर भ्रमण के लिए निकलते हैं, तब लाखों श्रद्धालु उनके दर्शन के लिए उमड़ पड़ते हैं। इस यात्रा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि भगवान स्वयं अपने भक्तों के बीच आते हैं। यहां किसी विशेष वर्ग, जाति या समुदाय का एकाधिकार नहीं है। रथ की रस्सी खींचने का सौभाग्य हर व्यक्ति प्राप्त करना चाहता है। यह दृश्य सामाजिक समानता का ऐसा संदेश देता है, जिसका उदाहरण विश्व में दुर्लभ है।

जगन्नाथ संस्कृति का मूल संदेश है- सबका नाथ, जगन्नाथ। अर्थात सम्पूर्ण जगत का कल्याण और सभी मनुष्यों के प्रति समान भाव। यह यात्रा बताती है कि भारतीय संस्कृति में ईश्वर सबके हैं और समाज का प्रत्येक व्यक्ति सम्मान और समानता का अधिकारी है।

सामाजिक एकता और समरसता का जीवंत पाठ

इन दोनों यात्राओं में सबसे महत्वपूर्ण तत्व है सामाजिक समरसता। विभिन्न प्रांतों से आए लोग एक-दूसरे की भाषा नहीं जानते, फिर भी भावनाओं की भाषा उन्हें जोड़ देती है। कोई किसी से उसका धर्म, जाति, आर्थिक स्थिति या सामाजिक स्तर नहीं पूछता। सब एक ही भाव से जुड़ते हैं- आस्था और राष्ट्रभाव से।

यात्राओं में साथ चलना, एक-दूसरे की सहायता करना, भोजन साझा करना, संकट में सहयोग देना और अनजान लोगों को परिवार की तरह अपनाना भारतीय समाज की उस आत्मा को प्रकट करता है, जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत पर आधारित है। इन यात्राओं में यह भी स्पष्ट दिखाई देता है कि भारत की शक्ति उसकी विविधता में निहित है। अलग-अलग भाषाएं बोलने वाले, विभिन्न वेशभूषा धारण करने वाले और अलग-अलग परम्पराओं का पालन करने वाले लोग एक साथ खड़े होकर यह संदेश देते हैं कि भारत की सांस्कृतिक एकता किसी राजनीतिक विचार का परिणाम नहीं बल्कि हजारों वर्षों की जीवन परम्परा का स्वाभाविक स्वरूप है।

लोगों की भावनाएं: श्रद्धा, समर्पण और आत्मीयता

अमरनाथ और जगन्नाथ यात्रा में भाग लेने वाले लोगों की भावनाएं अत्यंत पवित्र और प्रेरणादायक होती हैं। उनके लिए यह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि आत्मिक यात्रा होती है। अनेक श्रद्धालु वर्षों तक इन यात्राओं की प्रतीक्षा करते हैं। वे इसे ईश्वर के सान्निध्य का अवसर मानते हैं।

यात्रा के दौरान लोगों में त्याग, अनुशासन, धैर्य और सेवा की भावना विकसित होती है। व्यक्ति अपने निजी स्वार्थों को पीछे छोड़कर समाज और राष्ट्र के व्यापक हित को समझने लगता है। यही कारण है कि इन यात्राओं से लौटने वाले अनेक लोग अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन अनुभव करते हैं।

राष्ट्रीय एकात्मता के सशक्त माध्यम

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में धार्मिक यात्राओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। अमरनाथ यात्रा और जगन्नाथ यात्रा केवल आध्यात्मिक आयोजन नहीं हैं बल्कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की सजीव अभिव्यक्ति भी हैं।

ये यात्राएं हमें सिखाती हैं कि समाज की वास्तविक शक्ति संगठन, सेवा और परस्पर विश्वास में निहित है। करोड़ों लोगों की आस्था से संचालित ये आयोजन इस सत्य को पुनः स्थापित करते हैं कि भारत केवल एक राष्ट्र नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक परिवार है, जहां विविधता के बीच एकता और भिन्नताओं के बीच समरसता जीवन का मूल मंत्र है। ●●●

डॉ. दीपक कोहली

यदि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित, समृद्ध और जीवित भारत सौंपना चाहते हैं, तो हमें आज और इसी समय से पानी की हर एक बूंद की कीमत समझनी होगी और 'जल-योद्धा' बनकर अपनी धरती की प्यास बुझाने का संकल्प लेना होगा।

जलसंकट व सूखते जलस्रोत

जल ही जीवन है, यह शाश्वत सत्य हम सदियों से सुनते आ रहे हैं, लेकिन आज 21वीं सदी के भारत में यह जीवन ही सबसे बड़े संकट के मुहाने पर खड़ा है। भारत दुनिया की सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश है, जहां वैश्विक जनसंख्या का लगभग 18 प्रतिशत हिस्सा निवास करता है, परंतु विडम्बना यह है कि इस विशाल जनसंख्या के लिए दुनिया के कुल उपभोग योग्य स्वच्छ जल का मात्र 4 प्रतिशत हिस्सा ही उपलब्ध है। यह असंतुलन अपने आप में इस बात का स्पष्ट संकेत है कि देश में जल का प्रबंधन भयावह स्थिति में है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या, अनियोजित और अनियंत्रित शहरीकरण, औद्योगिक कचरे का कुप्रबंधन और सबसे बढ़कर प्रकृति के साथ की जा रही निरंतर छेड़छाड़ ने पूरे देश को एक ऐसे भयावह मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहां पानी की हर एक बूंद के लिए भविष्य में महायुद्ध जैसी स्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं।

इस गहराते जल संकट के पीछे जो सबसे प्रमुख और प्राकृतिक कारण दिखाई देता है, वह है हमारी मानसून पर अत्यधिक और अंधी निर्भरता। भारत की कृषि, जो देश की अर्थव्यवस्था और ग्रामीण जनसंख्या की रीढ़ है, आज भी बहुत सीमा तक मानसूनी बारिश पर ही टिकी हुई है। देश के कई राज्य जैसे महाराष्ट्र का विदर्भ और मराठवाड़ा क्षेत्र, राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र, गुजरात के कुछ हिस्से, मध्य प्रदेश और दक्षिण भारत के कई राज्य पूरी तरह से इस पर निर्भर रहते हैं कि मानसून की बारिश कैसी होती है।

वैश्विक तापमान में वृद्धि और 'क्लाइमेट चेंज' यानी जलवायु परिवर्तन के कारण अब मानसून का पूरा चक्र ही गड़बड़ा चुका है। 'अल नीनो' और 'ला नीना' जैसे वैश्विक महासागरीय बदलावों ने वर्षा के पैटर्न को इतना अनिश्चित कर दिया है कि कभी कम समय में तीव्र बारिश होने से नदियां उफान पर आ जाती हैं और बाढ़ विध्वंस मचा देती है, तो कभी महीनों तक सूखा पड़ा रहता है।

मानसून की इस आंख-मिचौली से भी बड़ा और आत्मघाती संकट हमने स्वयं अपने हाथों से खड़ा किया है, जिसे विकास की अंधी दौड़ के रूप में देखा जा सकता है। आधुनिकता और शहरीकरण के नाम पर हमने अपने पारम्परिक और प्राकृतिक जलस्रोतों को जिस बेरहमी से पाट रहे हैं, वही आज हमारे गले का फांस बन चुका है। भारत की पारम्परिक जीवन शैली में तालाबों, पोखरों, झीलों, कुओं और बावड़ियों को

देवताओं की तरह पूजा जाता था और समाज उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी लेता था। दक्षिण भारत की 'एरी' प्रणाली, बुंडेलखंड के चंदेलकालीन तालाब या राजस्थान के पारम्परिक टांके इसके अच्छे उदाहरण रहे हैं, लेकिन जैसे ही कंक्रीट के जंगलों का विस्तार शुरू हुआ, हमने इन जीवनदायिनी जल संरचनाओं को कचरा फेंकने का स्थान मान लिया।

देश के लगभग हर छोटे-बड़े शहर, कस्बे और गांव की यही कहानी है कि जहां कभी विशाल तालाब होते थे, जो मानसून के पानी को समेटकर पूरे वर्ष आस-पास के क्षेत्र के भूजल स्तर को रिचार्ज करते थे, आज उन्हें मलबे और मिट्टी से पाट दिया गया है।

इस अंधाधुंध निर्माण कार्य का एक और भयानक पहलू यह है कि हमने जमीन को कंक्रीट की ऐसी अभेद्य चादर से ढंक दिया है कि कच्ची मिट्टी का नामोनिशान मिटता जा रहा है। शहरों की गलियां, फुटपाथ और आंगन तक आज सीमेंटेड या टाइल्स से ढके हुए हैं। इसकी सीधी वैज्ञानिक हानि यह हो रही है कि जब बारिश होती है, तो पानी को जमीन के भीतर रिसने यानी पर्कोलेशन के लिए कोई रास्ता ही नहीं मिलता। मिट्टी के अभाव में बारिश का पानी जमीन के अंदर जाने के बजाए नालियों और सीवरों के रास्ते बहकर प्रदूषित और बेकार हो जाता है।

एक ओर तो हम कंक्रीट बिछाकर भूजल के प्राकृतिक पुनर्भरण की प्रक्रिया को पूरी तरह ठप कर चुके हैं और दूसरी ओर अपनी दैनिक आवश्यकताओं, उद्योगों और सिंचाई के लिए हजारों फीट गहरे बोरवेल और ट्यूबवेल खोदकर जमीन के पेट से आखिरी बूंद तक पानी खींच रहे हैं।

इस भीषण संकट के दूरगामी और विनाशकारी परिणाम अब समाज में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पानी के अभाव और खेती बर्बाद होने के कारण बड़े पैमाने पर लोगों का शहरों की ओर पलायन हो रहा है, जिससे 'वॉटर रिफ्यूजियों' यानी जल शरणार्थियों का एक नया वर्ग खड़ा हो गया है और शहरी संसाधनों पर जनसंख्या का बोझ असहनीय होता जा रहा है। शहरों की मलिन बस्तियों में पानी के एक-एक टैंकर के लिए होने वाली लड़ाइयां और हिंसा अब रोजमर्रा के दृश्य बन चुके हैं।

कृषि के क्षेत्र में भी व्यापक नीतिगत सुधार की आवश्यकता है क्योंकि हमारे देश में उपलब्ध स्वच्छ जल का लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा कृषि में उपयोग होता है और फ्लड इरिगेशन के कारण इसका एक बड़ा हिस्सा बर्बाद हो जाता है। हमें

किसानों को ड्रिप इरिगेशन और स्प्रिंकलर पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना होगा और इस पर मिलने वाली सब्सिडी और तकनीकी सहायता को बढ़ाना होगा। साथ ही उन क्षेत्रों में फसलों के चक्र को बदलना होगा जहां भूजल का स्तर गम्भीर है। धान और गन्ना जैसी अत्यधिक पानी सोखने वाली फसलों की जगह मोटे अनाजों यानी मिलेट्स (बाजरा, ज्वार, रागी आदि) तथा कम पानी वाली दलहन व तिलहन की फसलों को बढ़ावा देना होगा।

संत रहीम ने सदियों पहले कहा था कि

'रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुस चून।।'

उनकी यह बात आज हमारे अस्तित्व की सबसे बड़ी चेतावनी और अकाट्य सत्य बन चुकी है। हम कंक्रीट के ऊंचे-ऊंचे महल तो खड़े कर सकते हैं, विकास दर के ऊंचे आंकड़े भी दिखा सकते हैं, लेकिन यदि उन महलों के नलों में पानी ही नहीं होगा, तो वह विकास केवल एक मरुस्थल की तरह बेजान और भयावह होगा। पृथ्वी पर पानी बनाने की कोई फैक्टरी नहीं है, इसे केवल सहेजा और संरक्षित किया जा सकता है।

उत्तराखंड में अवैध अतिक्रमण के विरुद्ध धामी सरकार ने व्यापक अभियान चलाकर वन भूमि और सरकारी सम्पत्तियों को अतिक्रमणमुक्त कराने की दिशा में उल्लेखनीय कार्रवाई की है।

अभियान

अभिमन्यु कुमार

अतिक्रमण पर धामी की कार्रवाई

उत्तराखंड के युवा मुख्य मंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सार्वजनिक रूप से घोषित किया है कि न तो उत्तराखंड का मूल स्वरूप बदलने दिया जाएगा और न ही किसी को कानून हाथ में लेने की आज्ञा दी जा सकती है। अतः पिछले लगभग 2 वर्षों से उत्तराखंड की धामी सरकार ने अतिक्रमण हटाने के लिए पूरे प्रदेश में सख्त अभियान चला रखा है। इसका उद्देश्य वन भूमि एवं सरकारी भूमि को बचाना और कानून का राज स्थापित करना है।

इस अभियान के अंतर्गत अब तक 10 हजार एकड़ से अधिक वन भूमि एवं सरकारी भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराया जा चुका है। अब तक 580 से अधिक अवैध संरचनाएं ध्वस्त की जा चुकी हैं। इनमें बिना अनुमति बने मंदिर, गुरुद्वारे की दीवारें, मजारें तथा अन्य निर्माण शामिल हैं।

उधम सिंह नगर जिले के किच्छा और सितारगंज रेंज में वन भूमि पर बनी दो अवैध मजारों को ध्वस्त कर दिया गया है। वहीं गदरपुर में सरकारी बाग की भूमि पर किए गए अवैध कब्जे को भी हटाया गया है। देहरादून नगर के हरिद्वार रोड, सहस्रधारा रोड, कारगी ग्रांट और धोरणखास क्षेत्रों में भी अवैध दुकानों, टिन शेड तथा 4 भवनों को ध्वस्त कर लगभग 700 वर्ग मीटर भूमि और ढाई बीघा भूमि को अतिक्रमणमुक्त कराया गया है। इसके अतिरिक्त हरिद्वार और कलियर में उत्तर प्रदेश सिंचाई विभाग की भूमि पर बनी एक अवैध मजार और 30 अवैध दुकानों को भी ध्वस्त कर दिया गया है। किसी भी प्रकार के अवैध अतिक्रमण को समाप्त करने की सरकार की नीति के लिए स्पष्ट एसओपी स्टैंडर्ड ऑपरेशन प्रोसिजर निर्धारित कर दी गई है। मुख्य मंत्री ने स्पष्ट किया है कि अवैध अतिक्रमण से मुक्त कराई गई जमीन का प्रयोग विकास कार्य, पर्यटन और रोजगार सृजन में होगा।

हर शहर में 3 महीने के अंदर एक डिजिटल पोर्टल बनाया जाएगा, जिसमें नोटिस और कार्रवाई का पूरा रिकॉर्ड वीडियो सहित उपलब्ध रहेगा। मुख्य मंत्री ने अधिकारियों से कहा है कि वे केवल फाइलों तक सीमित न रहें बल्कि मैदान में उतरकर कार्य करें। उत्तराखंड की जनता तथा पार्टी कार्यकर्ताओं से सीधे संवाद स्थापित करने वाले मुख्य मंत्री धामी ने स्पष्ट कहा है कि देवभूमि की पवित्रता और सामाजिक ताने-बाने से खिलवाड़ करने वालों को किसी भी कीमत पर छोड़ा नहीं जाएगा।

15 दिन का नोटिस अनिवार्य: अवैध अतिक्रमण पर बुलडोजर कार्रवाई से पहले अतिक्रमणकारी को 15 दिन का नोटिस पंजीकृत डाक, ईमेल और डिजिटल पोर्टल के माध्यम से दिया जाएगा। आपत्ति होने पर सुनवाई का अवसर भी मिलेगा।

लक्षित क्षेत्र: तराई के जिलों- देहरादून, हरिद्वार, उधम सिंह नगर और नैनीताल- पर विशेष ध्यान दिया गया है क्योंकि यहां अतिक्रमण के सबसे अधिक मामले सामने आए हैं।

नदी-नालों के किनारे: मानसून को देखते हुए नदी, नालों और खालों के पास अवैध निर्माण हटाने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि आपदा की स्थिति में जान-माल की हानि कम हो।

कानून का उल्लंघन बनाया आधार: सरकार का कहना है ये कार्रवाई किसी समुदाय विशेष के विरुद्ध नहीं बल्कि कानून का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध की जा रही है।

विश्व युवा कौशल दिवस- 15 जुलाई

आज आवश्यकता केवल शिक्षित युवाओं की नहीं बल्कि ऐसे कुशल, नवाचारी, तकनीकी रूप से दक्ष, नैतिक और आत्मनिर्भर युवाओं की है, जो बदलती वैश्विक चुनौतियों का सामना करते हुए भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएं।

डॉ. ताड़केश्वर नाथ मिश्र

आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला

प्रत्येक वर्ष 15 जुलाई को विश्व युवा कौशल दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य युवाओं को ऐसे व्यावहारिक, तकनीकी, डिजिटल तथा रोजगारोन्मुखी कौशलों से सशक्त बनाना है, जो उन्हें बदलते वैश्विक परिदृश्य में सफल बनाने के साथ-साथ राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास में सक्रिय भागीदारी के योग्य बनाएं। आज के समय में केवल शैक्षणिक डिग्री पर्याप्त नहीं है बल्कि उसके साथ व्यावहारिक ज्ञान, नवाचार की क्षमता, तकनीकी दक्षता, संवाद कौशल, नेतृत्व क्षमता और समस्या-समाधान की योग्यता भी उतनी ही आवश्यक हो गई है।

विश्व युवा कौशल दिवस यह संदेश देता है कि किसी भी देश की सबसे बड़ी शक्ति उसकी युवा जनसंख्या होती है। यदि युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक कौशल भी प्रदान किए जाएं, तो वे न केवल स्वयं आत्मनिर्भर बन सकते हैं बल्कि रोजगार के नए अवसर भी सृजित कर सकते हैं। यही कारण है कि आज विश्व के अधिकांश देश कौशल विकास को अपनी विकास नीतियों का महत्वपूर्ण हिस्सा बना रहे हैं।

भारत विश्व के सबसे युवा देशों में से एक है। देश की बड़ी जनसंख्या युवा वर्ग की है, जो भारत के लिए जनसांख्यिकीय लाभ का अवसर प्रस्तुत करती है। यदि इस युवा शक्ति को सही दिशा, उचित प्रशिक्षण और आधुनिक कौशल उपलब्ध कराए जाएं, तो भारत विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ सकता है। इसके विपरीत यदि युवाओं के कौशल विकास पर पर्याप्त ध्यान न दिया जाए, तो बेरोजगारी, अल्प-रोजगार तथा सामाजिक-आर्थिक असमानताएं बढ़ सकती हैं।

विश्व युवा कौशल दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य युवाओं के समक्ष उपस्थित बेरोजगारी, कम रोजगार तथा कौशल-अभाव जैसी समस्याओं का समाधान करना है। वर्तमान समय में उद्योगों और कार्यस्थलों की प्रकृति तेजी से बदल रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, डेटा विश्लेषण, रोबोटिक्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, साइबर सुरक्षा तथा हरित अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्रों का विस्तार नए प्रकार के रोजगार उत्पन्न कर रहा है। इन परिवर्तनों के अनुरूप युवाओं को डिजिटल, तकनीकी और सामाजिक-भावनात्मक कौशलों से लैस करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। आज का नियोक्ता केवल तकनीकी ज्ञान ही नहीं बल्कि टीम में कार्य करने की क्षमता, प्रभावी संचार, नेतृत्व, समय प्रबंधन, नवाचार, रचनात्मक सोच, नैतिकता और बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने की योग्यता को भी महत्व देता है। इसलिए कौशल विकास का अर्थ केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं बल्कि जीवनभर सीखने की प्रवृत्ति विकसित करना भी है।

भारत सरकार ने युवाओं के कौशल विकास को राष्ट्रीय

प्राथमिकता के रूप में स्वीकार किया है। इसी दिशा में 15 जुलाई 2015 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने स्किल इंडिया मिशन का शुभारम्भ किया। इस ऐतिहासिक पहल का उद्देश्य देश के करोड़ों युवाओं को रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण प्रदान करना, उन्हें उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करना तथा स्वरोजगार और उद्यमिता के लिए प्रोत्साहित करना है। स्किल इंडिया मिशन के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण, प्रमाणन और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं, जिससे युवाओं की कार्यक्षमता में वृद्धि हो रही है और वे आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। स्किल इंडिया मिशन के अंतर्गत अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं, जिनमें विभिन्न उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम, अल्पकालिक कौशल पाठ्यक्रम, अप्रेंटिसशिप तथा उद्यमिता विकास कार्यक्रम शामिल हैं। इन पहलों का उद्देश्य केवल नौकरी दिलाना नहीं बल्कि युवाओं को रोजगार देने वाला बनाना भी है। इससे आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को भी मजबूती मिलती है। वर्तमान समय में डिजिटल क्रांति ने कार्य करने के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है। ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल भुगतान, ई-कॉमर्स, क्लाउड कम्प्यूटिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते उपयोग ने नई सम्भावनाओं के द्वार खोले हैं। ऐसे में युवाओं के लिए डिजिटल साक्षरता और तकनीकी दक्षता अत्यंत आवश्यक हो गई है। साथ ही पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की वैश्विक आवश्यकता को देखते हुए हरित अर्थव्यवस्था से जुड़े कौशलों का महत्व भी निरंतर बढ़ रहा है। सौर ऊर्जा, ऊर्जा संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन, जैविक कृषि तथा पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों के क्षेत्र में प्रशिक्षित युवाओं के लिए रोजगार की सम्भावनाएं तेजी से बढ़ रही हैं।

शैक्षणिक संस्थानों की भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को पारम्परिक शिक्षा के साथ-साथ कौशल आधारित शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, इंटर्नशिप, उद्योगों के साथ सहयोग, स्टार्टअप संस्कृति, नवाचार प्रयोगशालाओं तथा अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ावा देना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा और कौशल के समन्वय पर विशेष बल देती है, जिससे विद्यार्थी शिक्षा पूरी करने के बाद रोजगार और उद्यमिता दोनों के लिए सक्षम बन सकें। युवा स्वयं भी कौशल विकास की इस प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनें। उन्हें नई तकनीकों को सीखने, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में भाग लेने, संचार कौशल विकसित करने, विदेशी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने, डिजिटल उपकरणों का प्रभावी उपयोग सीखने तथा निरंतर स्वयं को अद्यतन रखने का प्रयास करना चाहिए। बदलते समय में सीखने की क्षमता ही सबसे बड़ा कौशल है। ●●●

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

पुस्तकों का खजाना

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

10 से अधिक प्रतियां बुक करने पर विशेष छूट दी जाएगी

₹ 700/- ₹ 700/- ₹ 700/- ₹ 700/- ₹ 700/- ₹ 400/- ₹ 60/- ₹ 200/-
₹ 500/- ₹ 250/- ₹ 180/- ₹ 250/- ₹ 250/- ₹ 150/- ₹ 200/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

• Bank Details : State Bank of India • Branch : Charkop,
• A/C No. : 00000043884034193 • IFSC Code : SBIN0011694

पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

प्रशांत : 9594961855 / भोला : 9930016472 / संदीप : 7045961331
कार्यालय : 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

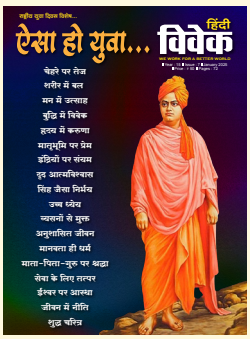

हिंदी विवेक

" We Work For A Better World"

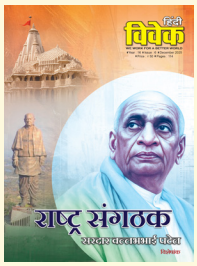

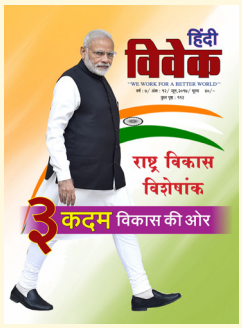

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

यूरोप में भीषण गर्मी का कहर

यूरोप सहित कई देशों में इन दिनों भीषण गर्मी का प्रकोप जारी है। उच्च तापमान के कारण सैकड़ों लोगों की जान जाने की आशंका जताई जा रही है। इस आलेख में भीषण गर्मी के पीछे के प्रमुख कारणों और इसके प्रभावों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

वर्तमान में यूरोप के अधिकांश देश भीषण गर्मी की चपेट में हैं। स्पेन, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, पुर्तगाल, डेनमार्क और फ्रांस सहित विभिन्न देशों में तापमान 43 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार इस लू की वजह से अब तक 1,500 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है या होने की आशंका है।

फ्रांस में स्थिति अत्यंत गम्भीर है। सरकार ने भीषण गर्मी को देखते हुए स्वास्थ्य आपातकाल घोषित कर दिया है। फ्रांस के मौसम विभाग मेतेओ फ्रांस के अनुसार 23 जून को देश 1947 के बाद सबसे गर्म दिन दर्ज किया गया। कुछ क्षेत्रों में तापमान 44.4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, जबकि पेरिस में अधिकतम तापमान 40.9 डिग्री सेल्सियस रहा। ब्रिटेन में तापमान 36 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला गया है। स्पेन में 1950 के बाद पहली बार इतने लगातार उच्च तापमान वाले दिन दर्ज किए जा रहे हैं। सामान्यतः यूरोप में जून महीने का औसत तापमान 20 से 28 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। इस वर्ष यह औसत तापमान सामान्य से 10 से 15 डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज किया गया है। फ्रांस में औसत तापमान 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया।

यूरोपीय मौसम संस्थान के अनुसार जब तीन या इससे अधिक दिनों तक तापमान सामान्य से ऊपर बना रहता है, तो उसे हीटवेव माना जाता है। इस स्थिति के निर्माण में उच्च दबाव वाली मौसम प्रणाली (हाई प्रेशर सिस्टम) मुख्य भूमिका निभाती है, जिसे ओमेगा ब्लॉक के नाम से जाना जाता है।

भीषण गर्मी के कारण कई देशों में प्रशासनिक व्यवस्थाएं प्रभावित हुई हैं। ब्रिटेन के मौसम विभाग ने दुर्लभ रेड अलर्ट जारी किया है। पोलैंड, बाल्कन क्षेत्र और जर्मनी में भी हीटवेव चेतावनी जारी की गई है। जंगलों में आग लगने की आशंका को देखते हुए चेक गणराज्य सहित कई देशों ने हाई अलर्ट जारी कर दिया है। कई स्थानों पर स्कूलों को बंद कर दिया गया है तथा बुजुर्गों और बीमार व्यक्तियों के लिए कूलिंग सेंटर स्थापित किए जा रहे हैं।

इसके अलावा बिजली की खपत में भारी वृद्धि दर्ज की गई है। बेल्जियम में बिजली की कीमत एक यूरो प्रति किलोवाट-घंटा से अधिक हो गई है। फ्रांस में बढ़ती मांग को देखते हुए बिजली दरों में वृद्धि कर दी गई है।

स्निग्धा अवतंस

सिटीजन विजिलेंट ने छेड़ी नई बहस

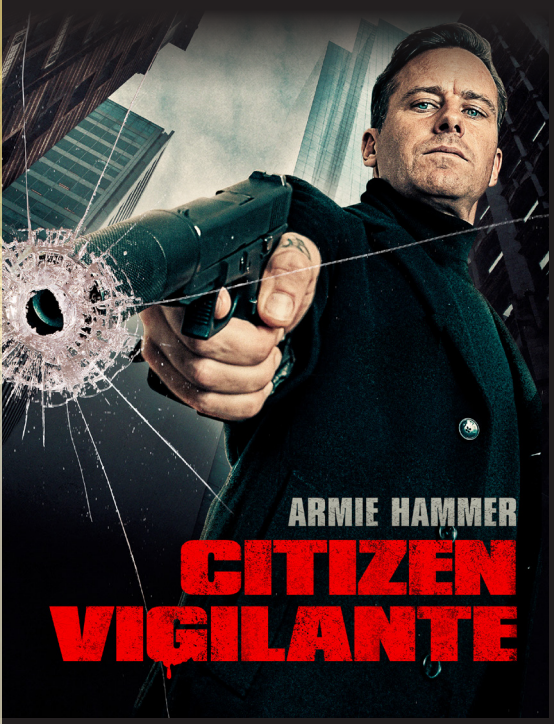

सिनेमा

विष्णु शर्मा

'सिटीजन विजिलेंट' हॉलीवुड सिनेमा में भी एक ऐसी फिल्म प्रदर्शित हुई है जिसमें यूरोप के कई देशों में अप्रवासियों को लेकर उभर रही चिंताओं और उनके चलते वहां के मूल निवासियों में हो रही प्रतिक्रियाओं को दिखाती है।

धुरंधर मूवी में जहूर मिस्त्री का रोल कर रहे विवेक सिन्हा के हिस्से में एक ऐसा डायलॉग आया, जिसको लेकर सोशल मीडिया पर काफी चर्चा रही, जिसमें जहूर कहता है, हिंदू कौम बड़ी डरपोक होती है। फिल्म में इसका उत्तर भी दिया गया। जब भी आप समाज के असली चेहरे को बड़े परदे पर बिना लाग लपेट के रखते हो, इसी तरह के विवाद होते हैं, ऐसी फिल्मों की एक विशेष बुद्धिजीवी वर्ग कड़ी आलोचना भी करता है, लेकिन वही वर्ग अपने एजेंडे के हिसाब से कई तरह के वर्ग संघर्षों को पसंद भी करता है। अब हॉलीवुड सिनेमा में भी एक 'धुरंधर' आ गई है, जिसने बिना लाग लपेट के यूरोप के कई देशों में हो रहे अप्रवासियों को लेकर उभर रही चिंताओं और उनके चलते वहां के मूल निवासियों में हो रही प्रतिक्रियाओं को दिखाती है, मूवी का नाम है 'सिटीजन विजिलेंट'।

आपने भारत में 'शहंशाह' से लेकर 'हिंदुस्तानी' और 'गब्बर' जैसी अनेक फिल्में देखी होंगी, जिसमें न्यायालयों के जरिए न्याय ना मिलता देखकर हीरो समाज या देश के शत्रुओं को स्वयं न्याय देता है, उनकी जान लेकर। इसी थीम पर है अमेरिकी अभिनेता आर्मी हैमर की ये मूवी। पिछले महीने ही ब्रिटेन में एक सनसनीखेज रिपोर्ट 'द रेप गैंग इन्क्वायरी रिर्पोट' से खुलासा हुआ कि वहां की 250000 लड़कियों का रेप इस सदी में हुआ और बलात्कारी ज्यादातर मुस्लिम थे। एक ब्रिटिश सांसद के साथ-साथ एलन मस्क ने भी ये रिपोर्ट शेयर की। ऐसे में इसी विषय के आसपास बनने वाली मूवी जब एप्पल टीवी और अमेजन प्राइम पर सब्सक्रिप्शन के साथ रिलीज हुई तो पहले दिन ही रैंकिंग में नम्बर 1 पर पहुंच गई। जर्मनी की फिल्म रेटिंग संस्था ने जब इसे कोई रेटिंग नहीं दी तो फिल्म वहां रिलीज ही नहीं हुई, जबकि निर्देशक उवे बॉल जर्मनी के ही हैं, फिर से एलन मस्क सामने आए और 2 दिन के लिए ये मूवी एक्स (ट्विटर) पर डाल दी।

अब स्थिति ये है कि हर 10 मिनट पर ट्विटर पर सैकड़ों लोग इसे अपलोड करते हैं और 1 घंटे के अंदर इसे ढूंढकर डिलीट कर दिया जाता है। तो लोगों ने एक और तोड़ निकाला है, फिल्म की कई सबसे मारक क्लिप्स एडिट करके अपलोड कर दी हैं और उनको कोई डिलीट भी नहीं कर रहा है, लेकिन हॉलीवुड के पूरे फिल्मी जगत ने इसे नकार दिया है। रॉटन टोमेटो, हॉलीवुड रिपोर्टर जैसी कई वेबसाइट्स पर इसको बेहद कम रेटिंग दी गई है, लेकिन फिर भी ये मूवी दुनियां में सबसे ज्यादा सर्च करने वाली मूवी बन गई है। जिसका कारण है कि उन्ही रिव्यूज के नीचे दर्शकों द्वारा कई गुना ज्यादा रेटिंग देना।

आखिर ऐसा क्या है इस मूवी में? माइकल सांडर्स (आर्मी हैमर) एक पूर्व अमेरिकी फौजी है, विरासत में मिले अपने पिता के रीयल एस्टेट बिजनेस को सम्भालने यूरोप में आता है। जहां वो अप्रवासियों के व्यवहारों से परेशान हो जाता है। वो देखता है कि कैसे भ्रष्ट अधिकारी, यहां तक कि जज भी नाबालिग होने जैसे तर्क देकर अपराधियों को छोड़ देते हैं। तब वो बन जाता है 'सिटीजन विजिलेंट' ये सजग नागरिक शहंशाह की तरह उन्हें ढूंढ-ढूंढकर सजा देना शुरू कर देता है।

स्वभाविक है खोज भी शुरू हो जाती है, लेकिन वो कई सुरक्षा एजेंसी वालों की भी लाशें गिरा देता है। एक जज को भी मार देता है। रेप पीड़िता को न्याय देने के लिए एक ही घर में उसके 7 बलात्कारियों को मारने से पहले उनमें से एक के पिता और बहन द्वारा उसके बचाव को लेकर जो बातचीत होती है, वही सोशल मीडिया में बहस का बड़ा मुद्दा बन गया है। लोग कार्टून मैगजीन चार्ली हैब्दो कांड को भूले नहीं हैं। यूरोप के कई बड़े शहरों से इन शरणार्थियों, अप्रवासियों के दंगों और आपराधिक कारनामों के समाचार अब आम हो चले हैं।

इस मूवी ने भी यूरोप को 'धुरंधर' की तरह दो हिस्सों में बांट दिया है। दिलचस्प बात है कि मूवी के हीरो आर्मी हैमर अपनी मां के यहूदी कनेक्शन के कारण स्वयं को हाफ यहूदी बोलते हैं, जबकि फिल्म के खलनायक कोस्टास (जांच अधिकारी) भी ऑस्ट्रेलिया में पैदा हुए और बाद में अमेरिका में बसे, उनके परिवार की जड़ें हालांकि यूनान में हैं, लेकिन दोनों का ही इस्लाम से कोई रिश्ता नहीं। मूवी में जिस तरह एक बलात्कारी के पिता ने कुरान की शिक्षाओं के आधार पर बेटे का बचाव किया, वो लोगों को अखर गया है, लेकिन इस मूवी को पसंद करने वालों को सांडर्स के जबावी प्रश्न ज्यादा मारक लगे, जिनमें वो उसकी बहन से पूछता है कि, क्या तुमने पीड़िता के लिए कोई संवेदना की पोस्ट की? बल्कि तुमने लिखा कि वो इसी योग्य थी।

सो जो लोग ब्रिटेन ग्रूमिंग मुस्लिम गैंग की गोरी लड़कियों के रेप की समाचारों से दुखी हैं, उनको इस फिल्म के जरिए गुस्सा निकालने का अवसर मिल रहा है। कानून के जो झोल हैं, उनसे भी लोगों में नाराजगी है, वो नहीं चाहते हैं कि उनकी संस्कृति पर कोई और संस्कृति हावी हो जाए बल्कि चाहते हैं कि अमेरिका जैसी कड़ाई हो। भारत में भी अनेक लोग हैं जो अजमेर का युवा कांगेस के मुस्लिम नेताओं का कांड हो या फिर टीसीएस का धर्मांतरण कांड या फिर हाल ही में अमरावती के मोहम्मद अयाज पर 100 नाबालिग लड़कियों की 350 वीडियो क्लिप्स मिलना। बहुत ज्यादा दिन नहीं हुए, जब मुम्बई के विरार में मुस्लिम लड़कों की ग्रुप ह्वाट्स-ऐप चैट में हिंदू लड़कियों के बारे में गंदे मैसेज और उनके मंशे भी वायरल हुए थे। नया है तो बस ये कि इस बार ये मामला धार्मिक दृष्टि से देखा जा रहा है, तो उत्तर में उस धर्म के प्रबुद्ध जनों को सामने आकर उन तथ्यों और आंकड़ों को अपने तर्कों, तथ्यों और आंकड़ों से झूठा सिद्ध करना चाहिए ताकि कोई और सच यदि है तो सामने आ सके।

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क
₹ 500

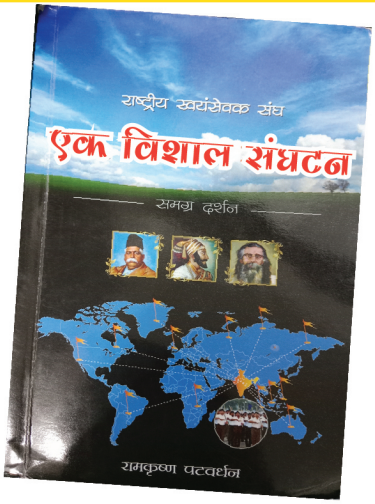

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

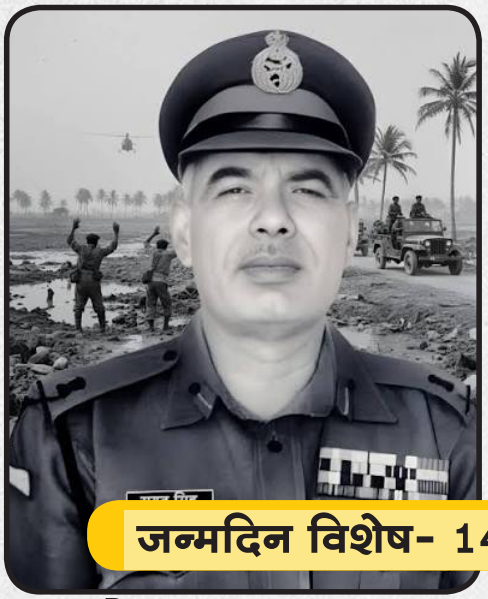

कुशल सेनापति ले.जनरल सगत सिंह

कुशल सेनापति लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह भारत के उन महान सेनानायकों में से एक थे जिन्होंने युद्ध के मैदान में कभी हार नहीं मानी। 1961 में गोवा मुक्ति, 1967 में नाथू ला दर्रे की रक्षा और 1971 के बांग्लादेश युद्ध में उनकी रणनीति आज भी सैन्य इतिहास का उदाहरण है।

जन्मदिन विशेष- 14 जुलाई

ले. जन. सगतसिंह भारत के महान सेनानायक थे। उन्होंने 1961 में गोवा की मुक्ति, 1967 में नाथू ला दर्रे की रक्षा तथा 1971 में बंगलादेश के युद्ध में अप्रतिम वीरता दिखाई। इसीलिए उन्हें पेशवा बाजीराव, अमरीकी जनरल पेटन, इंग्लैंड के जनरल मांटगोमरी तथा जर्मनी के जनरल रोमेल जैसा सेनापति माना जाता है। उनकी योजना तथा रणनीति सदा सफल रही।

सगतसिंह का जन्म 14 जुलाई, 1919 को बीकानेर में हुआ था। उनके पिता ठाकुर ब्रजपाल सिंह भी सैन्य अधिकारी थे और वे प्रथम विश्व युद्ध में लड़े थे। पहले वे बीकानेर की सेना में भरती हुए। 1941 में भारतीय सैन्य अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त कर वे द्वितीय विश्व युद्ध में ईराक, सीरिया तथा फिलीस्तीन के मोर्चे पर गए। 1961 में उन्हें ब्रिगेडियर बनाकर आगरा की पैराशूट ब्रिगेड में भेजा गया। वे छाताधारी सैनिक नहीं थे, पर जिम्मेदारी पाकर 42 वर्ष की अवस्था में उन्होंने इसमें भी दक्षता प्राप्त कर ली।

1961 में गोवा मुक्ति अभियान में मुख्य सेना के पणजी पहुंचने से पहले ही पैराशूट ब्रिगेड की तीन बटालियनों ने वहां पहुंचकर तीन ओर से घेरा डाल दिया। अतः पुर्तगाली सेना ने हथियार डाल दिए। 1965 में उन्हें मेजर जनरल बनाकर नाथू ला दर्रे पर भेजा गया, वहां चीन चैकियां बना रहा था। सगत सिंह ने अधिकारियों की अवज्ञा करते हुए अपनी सीमा में दोहरी तारबाड़ लगाकर क्षेत्र सुरक्षित कर लिया। कहते हैं कि इसीलिए उन्हें सेनाध्यक्ष नहीं बनाया गया। यद्यपि सभी सैन्य अधिकारी मानते हैं कि सगतसिंह की जिद के कारण नाथू ला दर्रा आज भारत में है अन्यथा नेहरू ने उसे चीन को दे ही दिया था। 1965 के युद्ध में इसी कारण चीन वाले वहां से घुसपैठ नहीं कर सके। मिजोरम क्षेत्र में स्वतंत्रता के बाद से ही अलगाववादी हिंसक आंदोलन चल रहे थे। 1967 में सगतसिंह को वहां भेजा गया। उन्होंने 'साम, दाम, दंड, भेद' की नीति अपनाकर दो वर्ष में स्थिति नियंत्रण में कर ली। उन्होंने वेरेंगटे में 'काउंटर इनसर्जेंसी एंड जंगल वारफेयर स्कूल' बनाया, जहां आज भी सैन्य अधिकारी तथा जवान आतंकरोधी प्रशिक्षण लेते हैं। इसके लिए उन्हें 'परम विशिष्ट सेवा मेडल' से सम्मानित किया गया। बांग्लादेश आंदोलन के दिनों में सगतसिंह को लेफ्टिनेंट जनरल बनाकर तेजपुर (असम) भेजा गया। 1971 में युद्ध छिड़ने पर उन्हें पूर्व दिशा से हमला करने को कहा गया। पश्चिम और दक्षिण दिशा से 'पद्मा' तथा पूर्व दिशा से 'मेघना' नदी ढाका की रक्षक है। मेघना का बहाव बहुत तेज तथा उसकी चैड़ाई लगभग चार कि.मी है, इसे पार करना बहुत कठिन था। फिर इधर स्थित सिल्हट, ब्राह्मणबाड़ा, कोमिल्ला, चटगांव और मौलवी बाजार में पाकिस्तान की मजबूत छावनियां थी। ऐसे में सगतसिंह ने एक अति दुःसाहसी कदम उठाया। उन्होंने चांदपुर बंदरगाह के सभी स्टीमरों पर हल्की तोपें रखकर उन्हें उस पार भेज दिया। फिर उन्होंने हैलिकॉप्टरों से अपने सैनिक उधर भेजने शुरू कर दिए। यह बहुत भयावह योजना थी। 9 दिसम्बर से 11 दिसम्बर की सुबह तक हैलिकॉप्टरों के 110 फेरों में पूरी डिवीजन मेघना पार कर गई। यह सूचना पाकर प्रधान मंत्री से लेकर रक्षा मंत्री तक खुशी से झूम उठे। उधर पाकिस्तानी सैनिक यह सुनकर भागने लगे, अब ढाका बिल्कुल सामने था। 14 दिसम्बर को सगतसिंह के आदेश पर बमवर्षा शुरू हुई और 16 दिसम्बर को पाकिस्तान ने हथियार डाल दिए। इस प्रकार थल, जल और नभ तीनों सेनाओं के सहयोग से सगतसिंह ने वह कर दिखाया, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। अवकाश प्राप्ति के बाद वे जयपुर में रहने लगे। उन्होंने अपने फार्म हाउस का नाम 'मेघना फार्म' रखा था। 26 सितम्बर, 2001 को भारत के महान सपूत और सेनानी 'पद्म भूषण' लेफ्टिनेंट जनरल सगतसिंह का देहांत हुआ।

थाईलैंड में मिली 2,000 वर्ष पुरानी अंगूठी

थाईलैंड में 2,000 वर्ष पुरानी सोने की अंगूठी की खोज हुई है। अंगूठी पर प्राचीन भारतीय ब्राह्मी लिपि में शिलालेख अंकित है। यह अंगूठी मानव अवशेषों और अन्य प्राचीन वस्तुओं के साथ खुदाई में मिली। इस खोज से भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच प्राचीन सांस्कृतिक एवं व्यापारिक सम्बंधों के मजबूत प्रमाण मिले हैं।

सिक्स-स्ट्रोक तकनीक पर देशी बाइक इंजन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र और प्रयागराज निवासी शैलेंद्र गौर ने सिक्स-स्ट्रोक तकनीक पर आधारित एक देशी बाइक इंजन विकसित करने का दावा किया है, जो एक लीटर ईंधन में करीब 170 से 176 किलोमीटर तक चल सकता है। यदि यह तकनीक बड़े स्तर पर प्रमाणित और अपनाई जाती है, तो यह वर्तमान माइलेज मानकों को पूरी तरह बदल सकती है।

शैलेंद्र गौर द्वारा विकसित यह इंजन पारम्परिक फोर-स्ट्रोक इंजन से अलग है। उनका दावा है कि यह सिक्स-स्ट्रोक इंजन ईंधन की ऊर्जा का करीब 70 प्रतिशत तक उपयोग करता है, जबकि सामान्य इंजन केवल लगभग 30 प्रतिशत ऊर्जा ही प्रयोग कर पाते हैं। अतिरिक्त स्ट्रोक के कारण दहन अधिक प्रभावी होता है, जिससे माइलेज बढ़ता है और गर्मी तथा ईंधन की बर्बादी कम होती है।

मालवा के आलू को मिली अंतरराष्ट्रीय पहचान

मालवा क्षेत्र की पहचान बने मालवी आलू को भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग मिल गया है। इससे अब इस उत्पाद को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग पहचान मिलेगी और किसानों के लिए नए बाजारों के अवसर बढ़ेंगे। इंदौर जिले में करीब 45 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में आलू की खेती होती है और लगभग 30 से 35 हजार किसान प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इससे जुड़े हुए हैं। विशेषज्ञों के अनुसार मालवी आलू की सबसे बड़ी विशेषता इसकी कम मिठास और कम स्टार्च है, जिसके कारण इससे बने चिप्स और फ्रेंच फ्राइज तलने के बाद भी सफेद बने रहते हैं।

समान नागरिक संहिता समिति में पद्मश्री रमेश पतंगे शामिल

मुख्य मंत्री देवेंद्र फडणवीस ने समान नागरिक संहिता समिति की घोषणा की

मुम्बई। महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री देवेंद्र फडणवीस ने विगत 9 जुलाई 2026 को महाराष्ट्र विधानसभा में राज्य में 'समान नागरिक संहिता' लागू करने सम्बंधित नियम बनाने के लिए सर्वोच्च न्यायालय की सेवानिवृत्त न्यायाधीश रंजना देसाई की अध्यक्षता में एक समिति की घोषणा की। इस समिति में सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों के 3 सेवानिवृत्त न्यायाधीश, 1 संविधानविद्, 1 सेवानिवृत्त सिविल अधिकारी और सामाजिक क्षेत्र से दो व्यक्तियों को शामिल किया गया है। सर्वोच्च न्यायालय की सेवानिवृत्त न्यायाधीश रंजना देसाई की अध्यक्षता वाली इस समिति में उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश आर.सी. चव्हाण, उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश एस.जी. मेहेरे, सेवानिवृत्त मुख्य सचिव डी.के. जैन, सेवानिवृत्त महाधिवक्ता वीरेंद्र सराफ, शिक्षाविद् एवं सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. सुवर्णा रावल और हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था के अध्यक्ष एवं सामाजिक कार्यकर्ता पद्मश्री रमेश पतंगे को सदस्यों के रूप में शामिल किया गया है।

महेश देशपांडे को मिला 'कल्याण भूषण-2026' सम्मान

कल्याण। 'कल्याण नागरिक' समाचार पत्र के 78वें स्थापना दिवस के अवसर पर 5 जुलाई 2026 को आयोजित सम्मान समारोह में समाजसेवी एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता महेश देशपांडे को प्रतिष्ठित 'कल्याण भूषण-2026' सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान वरिष्ठ सम्पादक डॉ. सुकृत खांडेकर के करकमलों द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर अमित मोहरे तथा हेमलता पवार भी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। समारोह में महेश देशपांडे के विद्यालयीन सहपाठी मीनाक्षी कर्णिक, अपर्णा डिंगणकर और सचिन भागवत ने उपस्थित होकर उन्हें शुभकामनाएं दीं तथा उनका उत्साहवर्धन किया। वनवासी कल्याण आश्रम के सदस्य भी इस अवसर पर उपस्थित थे। यह समारोह आत्मीय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

डॉ. शिवानी कटारा को मिला 'तारा सिंह विशिष्ट राष्ट्रीय सम्मान- 2026'

लेखिका एवं शिक्षाविद् डॉ. शिवानी कटारा को उनके उत्कृष्ट लेखन के लिए मुम्बई स्थित स्वर्गविभा परिवार (Swargvibha.com) द्वारा तारा सिंह विशिष्ट राष्ट्रीय सम्मान– 2026 से सम्मानित किया गया है। वर्तमान में डॉ. शिवानी कटारा डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ के समाजशास्त्र विभाग में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने अपने लेखों, स्तम्भों एवं पुस्तकों के माध्यम से स्वास्थ्य, शिक्षा, भारतीय ज्ञान परम्परा, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़े विषयों को सरल, सारगर्भित एवं जनोन्मुखी स्वर प्रदान किया है।

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

THE SMART WAY TO MANAGE
YOUR SOCIETY FINANCES

BENEFITS

- Advance Data Management & Reporting
- Supporting Services & Broadcasting Facility
- Vehicle Management
- Dues & Reciept Management
- Maintenance Bill Payment Via UPI & Payment Gateway

www.tjsb.bank.in | ✆ : 022-48897204